ISSN 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | November - 2016

GRT Golden Research Thoughts

"पत्रकारिता के परिप्रेक्षा में दलित चिंतन"

रमेश मनोहर लमाणी
शोध छात्र , हिंदी विभाग , मानस गंगोत्री,मैसूर विश्वविद्यानिलय,मैसूर.

प्रस्तावना :

वर्तमान युग में पत्रकारिता का बड़ा महत्व है । पत्रकारिता समाज के रग–रग को अभिव्यक्ति देता है जहाँ समाज के प्रति दूषिता वातावरण फैल रहा है, उसके प्रति अपनी कारवाही का परिचय देता है । इसलिए पत्रकारिता को लेकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है कि इसने समाज के अधपतन को कम करने का कार्य किया है । पत्रकारिता से जुड़े विदवान समाज को नैतिकता से बाँधने का कार्य कर रहे है इतिहास ही साक्षी है ।

अखबार वह हथियार है जिससे किसी का कत्ल किया जा सकता है । समाज के सामने उसे धृणा का पात्र बनाया जा सकता है, और किसी की प्रशंस कर उसे आसमान में पहुँचाया जा सकता है । वह तिल का ताड़ और ताड़ को तिल बनाने की क्षमता रखता है । इसलिए पत्रिकारिता के परिप्रेक्ष में दलित चिंतन की भूमीका बड़ी महत्वपूर्ण है । पत्रकारिता के परिप्रेक्ष में दलित ।

स्वंतत्रता के पूर्व सन ११३० ई. में महात्मा गाँधी और डॉ. अंबेडकर दोनों ने साथ साथ पत्रकारिता शुरू की है । गाँधीजी ने अंग्रेजी में यंग इंडिया और डॉ. अंबेडकर ने मराठी में मूकनायक । गाँधीजी ने स्वतंत्रता के प्रश्नों के साथ हरिजन पत्र में अस्पृश्यता के प्रश्न को उठाया और अंबेडकर ने 'मूकनायक' में आजादी के स्वरूप और दलित मुक्ति आंदोलन चलाया और पत्रकारिता को जनसेवा का उत्कृष्ट मंच बनाया । गाँधीजी ने अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म पर कलंक बनाया । डॉ. अंबेडकर ने अस्पृश्यता को अपनी नर देह पर कलंक बताया ।

डॉ. श्यौराज सिंह बेजैने ने हिंदी की दलित 'मूक नायक' से पत्रकारिता आरंभ करते हुए प्रवेशांक में कहते हैं बहिष्कृत लोगों पर हो रहे और भविष्य में संभावित अन्याय का उपाय सोचकर उनकी भावी उन्नति के मार्ग में सच्चे स्वरूप की ऊहापोह करने के लिए वर्तमान पत्रों जैसे अन्य भूमिका नहीं । उनका अनुभव था कि प्रमुख अधिसंख्य पत्र जाति विशेष के हित साधन हैं । इस दुखद अहसास की गोद से उनकी पत्रकारिता ने जन्म लिया ।

स्वतंत्रता के पूर्व और पशचात अधिकार हिंदी समाचार पत्रों ने यथास्थितिवाद का ही समर्थन किया, किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् कुछ एसे भी गैर दलित पत्रकार रहे–जिन्होंने दलितों के प्रश्नों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन में टाइम्स आफ इंडिया ग्रुप की प्रमुख पत्रिका 'सारिका' के संपादक कमलेश्वर जिन्होंने ११७५ ई. में विशेष दलित अंक प्रकाशित किया राजेंद्र यादव

'हंस–पत्रिका' जनसत्ता के प्रभाव जोशी, माया के मधु लिगये, नवभारत टाइम्स के राजेन्द्र माथुर, दिनमान के रघुवीर सहाय सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, समाजवादी लेखक सुरेंद्र मोहन, उदयन शर्मा, चंडीगढ़ टाइम्स के संपादक डॉ. के. के. भारती, समाचार संकल्न की श्रीमती कमलेश्वर भारती एंव अतुल कुमार आदि हैं ।

अन्य गैर दलित साहित्यकारों में 'संचेतना' के संपआदक डॉ. महीप सिंह सुमन लिपि पत्रिका के अतिथि संपादक डॉ. एन सिंह रामचंद्र शुक्ल संस्थान द्वारा संचालित 'नया मानंदड'

संपादक डॉ. कुसुम चतुर्वेदी अतिथि संपादक डॉ. जयप्रकाश कर्दम तथा 'पश्योती' नवाँक १८ संपादक प्रणव कुमार बांधोपाद्याय द्वारा दलित साहित्य विशेष पर अंक निकाले गए । इनके अलावा दैनिक राष्ट्रीय सहारा ने अपने रविवारीय कई अंकों में और दैनिक हिन्दुस्तान ने अपने रविवारीय कई अंकों में दलित साहित्य पर सामग्री प्रकाशित की इसके लिए संपादकों ने कड़ी मेहनत की 'हंस पत्रिका' जिसके संपादक राजेंद्र यादव है, दलितों पर समय–समय पर कहानी, कविता देते रहते है । गैर दलित साहित्यकारों में डॉ. रमणिका गुप्ता जो 'युद्ध रत आम आदमी' त्रेमासिक की प्रधान संपादक का नाम दलित पत्रकारों में सम्मान के साथ लिया जाता है आम आदमी में दूसरी दुनिया की यथार्थ कहानियों में दलित कहानी विशेषांक निकाला, दलित कार्य सोध साहित्य, और दलित चेतना अंक निकाले हैं । गुजराती दलित साहित्य, तेलुगु दलित साहित्य और पंचाबी दलित साहित्य, तेलुगु दलित साहित्य और पंजाबी दलित साहित्य के हिंदी आनुवाद अंक निकले और आदिवासी स्वर और 'नए स्वर' अंक में आदिवासी साहित्य के हिंदी अनुवाद के साहित्य का प्रकाशन किया है।

कन्नड़ के दलित चिंतक संघर्ष तथा आंदोलन के जनप्रिय कवि श्री चन्नप्पा वालीकर जी कन्नड में दलित आंदोलन के उदभव के लिए निम्न लिखित विषयों को प्रमुख मानते है ।

१) अन्य राष्ट्र, राज्य के साहित्यिक प्रभव – अमेरिका के व्ल्याक प्यांथार, महाराष्ट्र के दलित प्यांथर ।
2) राजनीति चिंतकों का प्रभार – डॉ. बि. आर. अंबेडकर के मानव अधिकार तथा जन्म के अंत तक संघर्ष बि. बसवलिंगप्पा के 'भूसा' प्रकरण तथा दलित संघर्ष समिति का जन्म ।
३) सांस्कृतिक चिंतको को प्रभाव–ज्योतिबा फूले और उनकी पत्नि के शैक्षिक कार्य पेरियार रामास्वामी जी के भगवान तथा धर्म विरोधि कृतियाँ
४) राजनीति उतार–चढ़ाव का प्रभाव–अखिल भारत कांग्रेस का विभाजन विरोध पक्ष में एकता इंदिरा गाँधी आपत्कालिन नीति स्थिति गरीबी हटाओं की घोषण और देवराज अरस के समय काँग्रेस विस्त्रुत कार्यक्रम की सफलता ।
५) अन्य अलग – अलग आंदोलनों का प्रभाव – मार्क्सवाद से समुदायिक आंदोलन, अंबेडकर के विचार से प्रभावित दलित संघर्ष समिति विप्लव साहित्य पर अंबेडकर वाद माक्सवाद लोहियावाद का प्रभाव किसानों के आंदोलन से दलित किसानों में स्वावलंबी जगृती महिला आंदोलन से दलित किसानें में स्त्रीवादि संघर्ष की चेतना, मदजूरों के आंदोलन से प्रभावित परिश्रमि मेहनती दलियों में जागृती और संस्कृतिक अंदोलनों से दलितानुभव है ।"

डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने शोध ग्रंथ हिन्दी दलित पत्रकारिता पर डॉ. अंबेडकर का प्रभाव में हिन्दी क्षेत्रों में निकलने वाले पत्र–पत्रिकाओं की एक लंबी सूची दी है । ––– इसमें कुछ बंद हो गए हैं और कुछ अभी भी प्रकारिता हो रहे हैं । दलित साहित्य की दृष्टि से नगपुर से निकलनेवाले मासिक अंगुत्तर, संपादक विमल कीर्ति और अरवधोष संपादक डॉ. तुलसीराम, लखनऊ से निकलनेवाले पत्र जनता साप्ताहिक संपादक कंवल भारती, पत्रिकाओं का बांद होने पर बड़ा दुखद रहा, जिनमें दलित साहित्य की पर्याप्त सामग्री और उच्च कोटि की संपादकीय होती थी ।

इस समय जो पत्र–पत्रिकाएँ निकल रही है उनमें दलित टुडे मासिक संपादक महीपाल सिंह राजियाबाद, तुतीय पक्ष त्रेमासिक संपादक देवेरा कुमार देव, देव जुबलपुर, पूर्वदेवा त्रेमासिक प्रधान, संपादक डॉ. आंवंतिका प्रसाद मरमट 'आशवस्त' मासिक प्रधान संपादक डॉ. तारा परमार उच्चैन, मासिक अंबेडकर मिशन, पटना संपादक बुद्ध शरण हंस अरावली, 'उदघोष' द्वैमासिक उदयपुर प्रधान संपादक पी.पी. वर्मा हम दलित संपादक प्रेम कपाडिया, दिल्ली, और दलित साहित्य वार्षिक की संपादक डॉ. जयप्राकाश कर्दम प्रमुख है । उक्त पत्रिकाओं में दलित साहित्य संबधी पर्याप्त सामग्री दी जा रही है । उक्त के आतिरिक्त शंबूक के मासिक प्रधान संपादक रवींद्र प्रसाद लड़डू पटाना, मासिक परिषद 'संदेश' प्रधान संपादक प्रभावी से भोपाल हिमायती पाक्षिक प्रधान संपादक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, दिल्ली, अभिमूक नायक मासिक प्रधान संपादक डॉ. एल भारती दिल्ली बिरसामुंडा अंबेडकर वाणी मासिक डॉ. चंद्रश्वर कर्ण गरिमा भारती 'साप्तहिक प्रधान संपादक डी.पी करूण लखनऊ 'अनार्थ भारत' साप्तहिक प्रधान संपादक एल. आर. सागर मैनपूरी, परिवर्तन, पाक्षिक, प्रधान संपादल डॉ. कुसुम मेघवाल उदयपुर नगमय संस्कृति अन्य समाचारों के साथ दलित विषयक समाग्री मिलती है । प्रबुद्ध जगत (हिन्दी अंग्रेजी) और वायस आँफ बुद्ध साप्ताहिक (हिन्दी अंग्रेजी) प्रधान संपादक उदय राज दिल्ली, साप्ताहिक में बौद्ध धर्म और धर्मांतरण संबधी अधिक सामग्री मिलती है ।

अक्त के अतिरिक्त अन्य दलित पत्र पत्रिकाओं में 'मूकवक्ता' मासिक संपादक डी.पी. राहुल दिल्ली, नगसेन साप्ताहिक प्रधान संपादक मेजर मधुकर रेंखा राणी शोंडे चंद्रपुर, महाराष्ट्र, नगा–टाइस्स साप्ताहिक टी.पी. आजाद, सीतापुर

दलित वायस मासिक बी.टी. राजशेखर भीम–पत्रिका मासिक संपादक एल, आर वाली जालंधर भीम, संदेश मासिक संपादक एन. एस. बनाफल दिल्ली । प्रबुद्ध अंबेडकर मासिक प्रधान संपादक रामस्वरूप बैद्य दिल्ली बहुजन संगठन साप्ताहिक करोलबाग दिल्ली बहुजन संघर्ष साप्ताहिक संपादक जितेंद्र कुमार दिल्ली हकदार मासिक, संपादक पन्नालाल जागता इंसान संपादक अजीत सिंह अहलावत रोहतक 'उत्यान मासिक, संपादक रयसिंह दिल्ली जन–तांत्रिक सत्ता संपादक नरेंद्र कुमार भोपाल बौद्ध धर्म प्रचारक मासिक संपादक प्रो. रमेश सिंह होरियार, दलित हितैषी संपादक मंजूमौर्य, दिल्ली अंबेडकर वाणी मासिक प्रधान संपादक दीपचंद खांडेकर उज्जेन का नाम लिया जा सकता है ।

इस समय मोहनदास नैमिशराय डॉ. कुसुम वियोगी डॉ.जयप्रकाश कर्दम, डॉ. पुरूषोत्तम सस्यप्रेमी डॉ. आवंतिका, प्रसाद मरमट बुद्ध शरण हंस तेजपाल सिंह तेज श्यौराज सिंह बेचैन कंवल भारती रजनी तिलक कुसुम मेघवाल डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर अशोक भारती डॉ. रमणिका गुप्ता डॉ. एन ओमप्रकाश वाल्मीकी देवेश कुमार देवेश, अंसगधोष चंद्रशेकर कर्ण डॉ. तेजसिंह विमल कीर्ती वि एल नण्य प्रेम कपाडिया, महिपाल सिंह एंव सत्यप्रकाश आदि अच्छे पत्रकारों में है ।

आधुनिक युग में इलेक्ट्रानिक मीडिया का महत्व बहुत बढ़ गया है । जिनके हाथों में इलेक्ट्रानिक मडिया हैं वे आभिजात वर्ग के लोग हैं उन्हें कम समय में आधिक धन की आवश्यकता रहती है । इसलिए अभी तक इनका ध्यान नहीं गया है । इस दृष्टि से दलित इलेक्ट्रानिक मीडिया का अभाव में अच्छा कदम उठाया है जिसमें प्रत्येक रविवार सांयकाल सात बजे 'दलित दशा और दिशा' कार्यक्रम को देने का प्रयास किया गया है । भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली ने वेगपूर्ण टि.वी चौनल चलाने की बात कही है । दलित पत्रकारिता का लक्ष्म जाति–व्यवस्था के विरुद मुहिम चलाना होना चाहिए जो तमाम बुरईयों को जन्म देती हैं । जातिवाद भारतीय संविधान के समता लोकतंत्र समाजवाद अबंधुता और न्याय के अविरूद्ध है दलितों के संघर्ष में इसे हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की जरूरत है । इसलिए दलित पत्रकार का विशेष उत्तरदायित्व हैं ।

आधार ग्रंथ :

१) विनोद गोदरे : हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप एंव संदर्भ.
२) जोगेन्द्र सिंह : हिन्दी पत्रकारिता की दिशाँए
३) राज किशोर : पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य
४) भारत वाणी : अगस्त २०१२
५) चन्नप्पा वालीकार : दलित कांदबरिगळु
६) डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन : हिन्दी दलीत पत्रकारिता पर डॉ.अंबेडकर का प्रभार.